

# ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया विजन एंड चैलेंजेज

सम्पादक

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

द्वारा अग्रसारण संदेश

डॉ. संदीप कुमार शर्मा (निदेशक)

प्रो. एन.एस. भण्डारी (कुलपति)

डॉ. रमेश चन्द्र पुरोहित (प्राचार्य)

डॉ. आभा शर्मा (प्राचार्य)



**N. B. Publications**

Ghaziabad - 201102 (India)

Published By:

## **N. B. Publications**

SF-1, A-5/3, D.L.F., Ankur Vihar,  
Loni, Ghaziabad-201102, U.P. (India)

Phones : 8700829963, 9999829572

E-mail : nbpublications26@gmail.com

Sale Distributor By:

### **KUNAL BOOKS**

4648/21, 1st Floor, Ansari Road,

Daryaganj, New Delhi - 110002.

Phones: 011-23275069, 9811043697

E-mail: kunalbooks@gmail.com

Website: www.kunalbooks.com

ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया : विजन एंड चैलेंजेज

**TRANSFORMING INDIA : VISION AND CHALLENGES**

© Editor

First Published : March 2022

ISBN: 978-93-91550-59-2

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

The opinions and views expressed are exclusively those of the authors and in no way the editors or the publisher is responsible for the same.

---

Published in India by N.B. Publications, and printed at **Trident Enterprises**, Noida, (U.P.)

## भारत की कामगार स्त्रियाँ और सशक्तिकरण का प्रश्न

**डॉ. शशि कला जायसवाल**

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर, उत्तर प्रदेश।

### सारांश

देश और दुनिया के हर हिस्से में महिलाएं श्रम कर रही हैं, और अपने जीवन में दोहरी जिम्मेदारियों के बावजूद वह परिश्रम से पीछे नहीं हटतीं। फिर भी उनके श्रम को पहचान के संकट से गुजरना पड़े तो इससे अधिक शर्मसार करने वाली बात और कोई हो ही नहीं सकती। इक्कीसवीं सदी में जीते हुए, आधुनिक कहलाने का स्वांग भरना अलग बात है और वास्तव में विचारों से प्रगतिशील और आधुनिक होना बिल्कुल ही दूसरी बात। खासकर जब बात महिला और उनके श्रम की आती है तो समाज और सत्ता दोनों ही मुंह चुराने लगते हैं। यदि देश को सामाजिक और आर्थिक रूप से मजबूत और उन्नत बनाना है तो महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में कदम उठाते हुए, उन्हें अच्छी शिक्षा और उनके श्रम को पहचान देने की जरूरत है।

**शब्द कुंजी** — श्रम, अर्थव्यवस्था, ग्रामीण भारत, महिला सशक्तिकरण, महिला कामगार।

6. महिला खेतिहर मजदूरों को कुशल कारीगर की श्रेणी में लाकर उनको समान एवं निर्धारित वेतन दिया जाना चाहिए।
7. ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा और उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे कि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें। अपने श्रम का मूल्य समझ सकें और उसकी मांग कर सकें।

घर में सम्मान और अधिकार पाने, घरेलू हिंसा और अपमान से निजात के लिए, महिलाएं आत्मनिर्भर होने की दिशा में कदम उठाती हैं, जिससे कि वे एक गरिमापूर्ण और स्वतंत्र जीवन जी सकें। अपने परिवार के लिए आर्थिक संबल बन सकें। ऐसा करते हुए वे जिस मानसिक और शारीरिक थकान से गुजरती हैं, इसका अंदाजा भी हम नहीं लगा सकते। एक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री को दो-दो मोर्चों पर अपनी लड़ाई लड़नी पड़ती है, और दोनों जगह स्वयं को फिट रख पाने के प्रयास में वह खुद को भी विस्मृत कर देती है। वह यह भी भूल जाती है कि वह अपने अस्तित्व तलाश में निकली है। जिस गरिमा और सम्मान के लिए वह इतना दर्द, तनाव और व्यंग्य झेलती है, वह उसे कितना हासिल हो पाता है? "भारतीय समाज के मध्यवर्गीय ढांचे में, हमने औरत को आधुनिक और आत्मनिर्भर तो बनाया पर उसे वह माहौल देने में असमर्थ रहे, जहां यह आत्मनिर्भरता उसे बराबर का हक या सम्मान दिला पाती।"<sup>8</sup> यहां समाज को भी अपनी जिम्मेदारी तय करनी होगी। आज आवश्यकता है हमें अपनी परंपरागत सोच बदलने की। विचारों की शक्ति अपरिमित होती है, जिस दिन समाज अपने विचारों में परिवर्तन लाने का संकल्प कर लेगा, दुनिया कामकाजी स्त्रियों के लिए आसान हो जाएगी। हमें खुले मन से स्वीकार करने की जरूरत है कि स्त्री भी उतनी ही काबिल, योग्य, परिश्रमी और काम के प्रति समर्पित है, जितना कि पुरुष। पुंसवादी मनोवृत्ति और विचार की गहरी जड़ों को काटे बिना स्त्री को बराबरी का हक देना, उसे समान निगाह से देख पाना संभव न होगा। "कुल मिलाकर यह कि शिक्षा और आत्मनिर्भरता स्त्री के सशक्तिकरण में सहायक तो है लेकिन स्थिति बेहतर तब होगी जब समाज के सोचने का तरीका बदलेगा।"<sup>9</sup>

### संदर्भ-सूची

1. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय : labour.gov.in
2. दृष्टि द विज्ञान : भारत में महिला श्रम की भागीदारी : अंक 21 जून 2019